भा.वा.अ.शि.प.-हिमालयन वन अनसधान संस्थान, शिमला द्वारा “नर्सरी एवं प्लांटेशन में शीशम के प्रबंधन” पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कायक्रम का आयोजन

भा.वा.अ.शि.प.- हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान (हि.व.अ.सं.) शिमला ने ***" नर्सरी एवं प्लांटेशन में शीशम के प्रबंधन"*** पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन दिनांक 25/03/2025 को संस्थान के क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र, बीड प्लासी, नालागढ़, जिला सोलन में किया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में नालागढ़ वन मण्डल के फील्ड स्टाफ, क्षेत्र महिला मण्डल व किसानों ने भाग लिया। प्रशिक्षण मुख्य रूप से शीशम को हानि पहुंचाने वाले रोगों और रोगजनकों के प्रबंधन एवं क्लोनल प्रोपेगेशन द्वारा शीशम की पौधशाला तैयार करने पर जागरूकता पैदा करने पर केंद्रित था । यह प्रशिक्षण राष्ट्रीय प्राधिकरण प्रति पूरक वनीकरण निधि प्रबंधन और योजना प्राधिकरण (**CAMPA**), नई दिल्ली द्वारा वित्त पोषित परियोजना **‘All India coordinated research project on *Dalbergia sissoo*’** के अंतर्गत किया गया। प्रशिक्षण मुख्य रूप से शीशम को हानि पहुंचाने वाले रोगों और रोगजनकों के प्रबंधन, उच्च गुणवत्ता वाले वृक्षों का चयन एवं क्लोनल प्रोपेगेशन द्वारा शीशम की पौधशाला तैयार करने के लिए जागरूकता पैदा करने पर केंद्रित था । डॉ. बालकृष्ण तिवारी, वैज्ञानिक, हि.व.अ.सं., शिमला और उक्त प्रशिक्षण कार्यक्रम के समन्वयक ने मुख्य अतिथि डा. संदीप शर्मा, निदेशक, हि.व.अ.सं., शिमला एवं विशिष्ट अतिथि श्रीमति परमजीत कौर, प्रधान, बीर पलासी, नलागढ़ और प्रतिभागियों का स्वागत किया। उन्होंने प्रशिक्षण कार्यक्रम में शामिल किए जाने वाले विषयों के बारे में जानकारी दी और संस्थान के शोध कार्यों पर प्रकाश डाला।

डॉ. संदीप शर्मा, निदेशक, हि.व.अ.सं., शिमला, ने मुख्य अतिथि, विशिष्ट अतिथि एवं प्रतिभागियों का स्वागत किया। उन्होंने कार्बनिक खाद, वर्मीकम्पोस्ट निर्माण और आधुनिक नर्सरी की स्थापना के लिए उपयोगकर्ता के अनुकूल तकनीकों पर चर्चा की। इसके अलावा, उन्होंने हिमाचल प्रदेश के प्रमुख कृषि-वानिकी प्रजातियों की नर्सरी **व रोपण** तकनीकों पर अपने अनुभव साझा किए।

विशिष्ट अतिथि श्रीमति परमजीत कौर ने हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला द्वारा प्रयासों की सराहना की और प्रतिभागियों को प्रशिक्षण में बताई गई तकनीकों को अपनाने की सलाह दी।

डॉ. अश्वनी तपवाल, वरिष्ठ वैज्ञानिक, हि.व.अ.सं., ने बताया कि पेड़-पौधों पर बीमारी करने वाले कवक/फफूंद वन पारिस्थितिक तंत्र के लिए एक गंभीर खतरा हैं, जो पेड़ों की बड़े पैमाने पर मृत्यु और जैव विविधता संतुलन को अस्तव्यस्त करने का कारण बन सकते हैं।

पेड़ों की संख्या को संरक्षित रखने और पारिस्थितिक संतुलन बनाए रखने के लिए रोगजनक कवक का प्रबंधन अत्यंत आवश्यक है। डा तपवाल ने कहा कि जलवायु परिवर्तन के अतिरिक्त, गैनोडरमा व फ्यूजेरियम कवक की प्रजातियाँ शीशम की संख्या कम होने का मुख्य कारण हैं। इसके लिए के जैव कवकनाशी बेहतर विकल्प प्रतीत होते हैं। इस संदर्भ में हि.व.अ.सं., शिमला ने शीशम की क्लोनल प्रापेगेशन एवं चीड़ के पतों पर ट्राइकोडर्मा प्रजाति से जैव कवकनाशी तैयार किया हैं। उन्होंने इस जैव कवकनाशी को तैयार और उपयोग करने की विधि भी सांझा की। इस के अतिरिक्त डॉ. तपवाल प्रशिक्षण के दौरान आधुनिक नर्सरी की स्थापना में माइकोराइजा के महत्व और उपयोग पर प्रकाश डालते हुए बताया कि हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान ने 'हिम मृदा संजीवनी' नामक माइकोराइजल जैव उर्वरक विकसित किया है। यह एक मिट्टी और वर्मीक्यूलाईट वाहक आधारित फॉर्मूलेशन है, जिसका उपयोग औषधीय पौधों, सब्जियों और चौड़ी पत्ती वाली फसलों की जैविक खेती में किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त, संस्थान ने 'हिम ग्रोथ बूस्टर' नामक माइकोराइजल जैव उर्वरक भी विकसित किया है, जिसे शंकुधारी पौधशालाओं में ग्रोथ बूस्टर के रूप में प्रयोग किया जा सकता है। इससे नर्सरी में शंकुधारी पौधों की वृद्धि अवधि कम होगी, जिससे रोपण बेहतर तरीके से स्थापित हो सकेंगे।

डॉ० बलकृष्ण तिवारी, वज्ञानिक हि० व० अ० सं०, शिमला ने वृक्ष सुधार के महत्व पर विस्तार से प्रकाश डाला तथा बताया की उच्च गुणवत्ता वाले वृक्षों के चयन, प्रवर्धन एवं उचित प्रबंधन से पादप उत्पादकता कैसे बढ़ाया जा सकता है। अच्छी एवं उच्च उत्पादन वाले वृक्षों की प्रजातियों अथवा क्लोनों के कृषि-वानिकी में उपयोग से किसानों के आय में भी वृद्धि की जा सकती है। डॉ. तिवारी ने संस्थान द्वारा शीशम वृक्ष सुधार के क्षेत्र में किए जा रहे कार्यों की जानकारी दी और प्लस पेड़ों के चयन, बीज और कायिक प्रवर्धन के माध्यम से उच्च गुणवत्ता वाले पौधों के विकास के तरीकों को साझा किया। उन्होंने यह भी बताया कि शीशम के रोग प्रतिरोधक क्षमता वाले प्रजातियों का विकास आवश्यक है और इस दिशा में हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला लगातार प्रयासरत है।

<u>कार्यक्रम कुछ झलकियाँ</u>

नर्सरी एवं प्लांटेशन में शीशम का प्रबंधन
TRAINING PROGRAMME
Welcome

शीशम के प्रबंधन पर लगाया प्रशिक्षण शिविर

नालागढ़ (सोलन)। नालागढ़ के बीड प्लासी में हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला ने नर्सरी एवं प्लांटेशन में शीशम के प्रबंधन पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में नालागढ़ वन मंडल के फील्ड स्टाफ, क्षेत्र महिला मंडल व किसानों ने भाग लिया।

प्रशिक्षण मुख्य रूप से शीशम को हानि पहुंचाने वाले रोगों और रोग जनकों के प्रबंधन, उच्च गुणवत्ता वाले वृक्षों का चयन एवं क्लोनल प्रोपेगेशन से शीशम की पौधशाला तैयार करने के लिए जागरूकता पैदा करने पर केंद्रित था।

वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. बालकृष्ण तिवारी और उक्त प्रशिक्षण कार्यक्रम के समन्वयक ने मुख्यातिथि संस्थान के निदेशक डॉ. संदीप शर्मा एवं विशिष्ट अतिथि पंचायत प्रधान परमजीत कौर रही। संवाद

Solan News: वैज्ञानिकों ने क्लोनल प्रोपेगेशन से शीशम के पौधे तैयार करने की दी जानकारी

नालागढ़(सोलन)। नालागढ़ के बीड प्लासी में हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला ने नर्सरी एवं प्लांटेशन में शीशम के प्रबंधन पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में नालागढ़ वन मंडल के फील्ड स्टाफ, क्षेत्र महिला मंडल व किसानों ने भाग लिया। प्रशिक्षण मुख्य रूप से शीशम को हानि पहुंचाने वाले रोगों और रोग जनकों के प्रबंधन, उच्च गुणवत्ता वाले वृक्षों का चयन एवं क्लोनल प्रोपेगेशन से शीशम की पौधशाला तैयार करने के लिए जागरूकता पैदा करने पर केंद्रित था। वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. बालकृष्ण तिवारी और उक्त प्रशिक्षण कार्यक्रम के समन्वयक ने मुख्यातिथि संस्थान के निदेशक डॉ. संदीप शर्मा एवं विशिष्ट अतिथि पंचायत प्रधान परमजीत कौर रही। उन्होंने प्रशिक्षण कार्यक्रम में शामिल किए जाने वाले विषयों के बारे में जानकारी दी और संस्थान के शोध कार्यों पर प्रकाश डाला। निदेशक डॉ. संदीप शर्मा कार्बनिक खाद, वर्मी कंपोस्ट निर्माण और आधुनिक नर्सरी की स्थापना के लिए उपयोगकर्ता के अनुकूल तकनीकों पर चर्चा की। इसके अलावा, उन्होंने हिमाचल प्रदेश के प्रमुख कॉनिफर प्रजातियों की कंटेनरीकृत नर्सरी तकनीकों पर अपने अनुभव साझा किए। विशिष्ट अतिथि पंचायत प्रधान परमजीत कौर ने हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला द्वारा प्रयासों की सराहना की और प्रतिभागियों को प्रशिक्षण में बताई गई तकनीकों को अपनाने की सलाह दी। इस मौके पर वन परिक्षेत्र अधिकारी रोहित ठाकुर, वन खंड अधिकारी, तरसेम लाल वन रक्षक पंकज शर्मा, विनोद विकास कटोच रजनीश मौजूद रहे।